Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

27

'राग दरबारी' उपन्यास में चित्रित ग्रामीण यथार्थवाद

डॉ. संतोष गायकवाड़,
सहयोगी प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,
सोनुभाऊ बसवंत महाविद्यालय, शहापुर, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई.

शोध सार: *श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण जीवन से जुड़ा है। उन्होंने ग्रामीण जीवन के व्यापक अनुभवों और निरंतर बदलते परिदृश्य का गहन विश्लेषण किया है। यह भी कहा जा सकता है कि श्रीलाल शुक्ल ने समाज को गहराई से खोजा है, उसकी जड़ों में गहराई से उतरकर उसकी नब्ज पकड़ी है। इसीलिए उनके साहित्य में यह ग्रामीण दुनिया दिखाई देती है। उनके साहित्य की मूल पृष्ठभूमि ग्रामीण समाज है, लेकिन शहरी जीवन के तमाम बिम्ब भी इसमें दिखाई देते हैं। 'राग दरबारी' एक ऐसा उपन्यास है जो एक गाँव की कहानी के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की निरर्थकता को सहजता और निर्ममता से उजागर करता है। यह शायद पहला बड़ा हिंदी उपन्यास है जो शुरू से अंत तक इतने निष्पक्ष और उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य के साथ लिखा गया है। फिर भी, 'राग दरबारी' व्यंग्य नहीं है। यह एक बड़े शहर से कुछ दूर एक गाँव के जीवन की कहानी है, जो वर्षों से प्रगति और विकास के वादों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों से जूझ रहा है। यह उस जीवन का एक जीवंत दस्तावेज है।*

शब्दकुंजी: ग्रामीण, यथार्थवाद, समाज, जीवन, साहित्य, गाँव, आदि।

प्रस्तावना:

यथार्थवाद का शाब्दिक अर्थ है सत्य का बोध या वास्तविकता का बोध। यथार्थवाद एक साहित्यिक और कलात्मक दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य वास्तविक जीवन के तथ्यों और घटनाओं को बिना किसी अतिशयोक्ति के प्रस्तुत करना है। यथार्थवाद में, लेखक समाज, व्यक्तित्व और परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण करता है। यथार्थवाद को समझने के लिए हमें इसके उद्देश्य, गुणों और प्रभावों को भली-भाँति समझना होगा। यह वास्तविक जीवन या घटनाओं का चित्रण करने की कला है। यथार्थवादी लेखक अपने पात्रों और घटनाओं का चित्रण बिना किसी मिथ्या धारणा या आदर्शीकरण के करते हैं। यथार्थवाद व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सच्चे पहलुओं, संघर्षों और कठिनाइयों को उजागर करता है। यथार्थवाद जीवन को यथार्थ रूप में, बिना किसी अतिशयोक्ति या कल्पना के, चित्रित करने पर बल देता है। लेखक का प्राथमिक लक्ष्य समाज और व्यक्तिगत परिस्थितियों, कठिनाइयों और जीवन के उतार-चढ़ावों का सटीक चित्रण करना है। यह व्यक्ति और समाज के बीच के संबंधों की सच्चाई को दर्शाता है। पात्रों की मानसिक और भावनात्मक अवस्थाओं का भी विस्तार से चित्रण किया गया है। यथार्थवाद के संदर्भ में सुधांशु शुक्ल ने लिखा है- "यथार्थवाद एक सृजनशील जीवन-दर्शन है, यह यांत्रिक नहीं अपितु द्वन्द्वात्मक है। इसमे सामाजिक मनुष्य की समग्रता व्यंजित होती है। नानाविध कर्तव्यों से भरे, विविध विषमताओं से युक्त हमारे जीवन में कभी किसी की एक क्षीण-मृदुस्मित रेखा सदा-सर्वदा के लिए हृदय पटल पर अंकित हो जाती है; कारण यह मुस्कान वास्तविक है जिसे समय चीन नहीं पाता।"[१]

यथार्थवाद 19वीं शताब्दी के मध्य में एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में उभरा, जब औद्योगिक क्रांति और यूरोप में सामाजिक परिवर्तनों के कारण समाज तेज़ी से बदल रहा था। यथार्थवाद ने फ्रांस, रूस और इंग्लैंड में एक साहित्यिक आंदोलन के रूप में अपनी पहचान बनाई। भारत में यथार्थवादी लेखन का उदय 20वीं शताब्दी के आरंभ में हुआ। प्रेमचंद भारतीय साहित्य में यथार्थवाद के सबसे प्रमुख लेखक माने जाते हैं। उनके उपन्यास और कहानियाँ भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं जैसे गरीबी, असमानता और सामाजिक न्याय के मुद्दों को उजागर करती हैं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'गोदान' भारतीय यथार्थवाद का एक बेहतरीन उदाहरण है, जिसमें उन्होंने किसानों की कठिनाइयों और समाज के शोषण का चित्रण किया है।

यथार्थवादी साहित्य समाज की वास्तविकताओं को उजागर करता है और पाठकों को सामाजिक मुद्दों पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार के लेखन ने समाज में जागरूकता पैदा की और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। यथार्थवाद साहित्य में एक नया दृष्टिकोण लेकर आया, जो कल्पना और आदर्शों के बजाय वास्तविकता पर केंद्रित था। यह साहित्यिक विधा रचनात्मकता के एक नए रूप का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें लेखक वास्तविक जीवन की जटिलताओं को प्रस्तुत करने में निपुण होते हैं। यथार्थवाद ने साहित्य में सामाजिक और व्यक्तिगत परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया। इसने साहित्य को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक सुधार और जागरूकता का माध्यम बनाया।

ग्रामीण जीवन की कठोर सच्चाई गरीबी और आर्थिक संघर्ष है। भारतीय गाँवों में किसान, मजदूर और छोटे व्यापारी जीविका के लिए निरंतर संघर्ष करते रहते हैं। आर्थिक तंगी और फसल खराब होने के कारण वे अक्सर कर्ज में डूब जाते हैं। इस कठोर सच्चाई को प्रेमचंद जैसे कई भारतीय लेखकों ने अपने लेखन में दर्शाया है। उनका 'गोदान' भारतीय ग्रामीण जीवन की गरीबी और दुख को यथार्थ रूप से चित्रित करता है। भारतीय गाँवों में कृषि मुख्य व्यवसाय है और किसानों का जीवन उनकी फसलों की सफलता या असफलता पर निर्भर करता है। सूखा, बाढ़, कीटों

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

का प्रकोप और बाज़ार में कम दाम - ये सभी कारक किसानों के लिए निरंतर संघर्ष का विषय हैं। प्रेमचंद का 'गोदान' एक किसान के अथक परिश्रम को दर्शाता है, फिर भी उसकी दुर्दशा में कोई सुधार नहीं आया है। यह किसान जीवन की कठिनाइयों और वास्तविकताओं का एक सशक्त चित्रण है।

भारतीय ग्रामीण जीवन में सामाजिक असमानता और जातिवाद की जड़ें गहरी हैं। दलित और कमज़ोर वर्ग के लोग अक्सर शोषण का शिकार होते हैं। समाज में उनका कोई स्थान नहीं है और उन्हें हीन समझा जाता है। प्रेमचंद के उपन्यासों में यह सामाजिक असमानता साफ़ दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, 'सेवासदन' में महिलाओं के शोषण और मानसिक तनाव और 'गोदान' में किसानों के शोषण का विस्तार से चित्रण किया गया है। ग्रामीण समाज में परंपराएँ गहरी जड़ें जमाए बैठी हैं और उनका पालन अनिवार्य है। परंपराएँ और सामाजिक दबाव लोगों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करते हैं। उदाहरण के लिए, विवाह, जाति व्यवस्था और महिलाओं के अधिकारों से संबंधित कड़े नियम हैं। इन परंपराओं के अंतर्गत व्यक्ति का जीवन अत्यंत सीमित है। प्रेमचंद और अन्य यथार्थवादी लेखकों ने अपनी रचनाओं में इस सामाजिक संरचना और उसके दबावों को उजागर किया है।

ग्रामीण यथार्थवाद भारतीय साहित्य का एक अभिन्न अंग है, जिसका प्रयोग लेखक जीवन के सच्चे, कठोर और चुनौतीपूर्ण पहलुओं को चित्रित करने के लिए करते हैं। यथार्थवादी साहित्य ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं - गरीबी, शोषण, असमानता, परंपरा और शारीरिक व मानसिक श्रम का सजीव चित्रण करता है। यह समाज की वास्तविकता को उजागर करता है और पाठक को यह सोचने पर मजबूर करता है कि ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने और विकसित करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं।

श्रीलाल शुक्ल हिंदी साहित्य के एक अग्रणी यथार्थवादी लेखक हैं, जिनके उपन्यासों ने भारतीय ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं को नपे-तुले और सटीक ढंग से चित्रित किया है। उनके उपन्यास ग्रामीण समाज की जटिलताओं, सामाजिक असमानता, परंपरा और राजनीतिक व्यवस्था के प्रभाव को गहन और संवेदनशील दृष्टिकोण से दर्शाते हैं। श्रीलाल शुक्ल ने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज, विशेषकर ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं को निडरता से न केवल गंभीर, बल्कि प्रासंगिक तरीके से उजागर किया है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की वास्तविकताओं का चित्रण समाज के विभिन्न पहलुओं - कृषि, सामाजिक परंपराओं, भ्रष्टाचार, जातिवाद और ग्रामीण जीवन पर राजनीति के प्रभाव - पर प्रकाश डालता है।

श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण जीवन से जुड़ा है। उन्होंने ग्रामीण जीवन के व्यापक अनुभवों और निरंतर बदलते परिदृश्य का गहन विश्लेषण किया है। यह भी कहा जा सकता है कि श्रीलाल शुक्ल ने समाज को गहराई से खोजा है, उसकी जड़ों में गहराई से उतरकर उसकी नब्ज़ पकड़ी है। इसीलिए उनके साहित्य में यह ग्रामीण दुनिया दिखाई देती है। उनके साहित्य की मूल पृष्ठभूमि ग्रामीण समाज है, लेकिन शहरी जीवन के तमाम बिम्ब भी इसमें दिखाई देते हैं। श्रीलाल शुक्ल ने साहित्य और जीवन के बारे में अपनी एक सहज धारणा का उल्लेख करते हुए कहा है- कथा साहित्य लिखते समय, जहाँ मैं जीवन के कुछ बुनियादी नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हूँ, वहीं मैं यथार्थ के प्रति भी गहराई से आकर्षित हूँ। लेकिन यथार्थ की यह धारणा एकांगी नहीं है; यह बहुस्तरीय है और इसके सभी स्तर - आध्यात्मिक, आंतरिक, भौतिक आदि - जटिल रूप से परस्पर जुड़े हुए हैं। उनकी समग्र समझ और अनुभव कभी-कभी रचना को जटिल बना सकते हैं, लेकिन उस समग्रता की समझ उसे उत्कृष्टता प्रदान करती है। जिस प्रकार व्यक्ति एक साथ कई स्तरों पर जीता है, उसी प्रकार इस समग्रता की पहचान भी रचना को बहुस्तरीयता प्रदान करती है।

'राग दरबारी' श्रीलाल शुक्ल का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है, जिसे भारतीय साहित्य में एक मील का पत्थर माना जाता है। इस उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण भारत की सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक स्थितियों का विस्तार से चित्रण किया है। का चिन्तन दिखायी देता है। श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास 'राग दरबारी' स्वतंत्र भारत के एक विकृत और पतनशील गाँव का चित्रण करता है। शिवपालगंज शहर से कुछ दूरी पर बसा एक गाँव है, जहाँ सरकारी योजनाओं का प्रभाव नगण्य है। राग दरबारी और स्वार्थ से प्रेरित ग्रामीण जीवन, प्रगति और विकास की वास्तविकता से कोसों दूर अवांछनीय तत्वों के आक्रमण से जूझता है। लोकतंत्र और गणतंत्र के नाम पर हमारे चारों ओर पनप रही राजनीतिक संस्कृति ग्राम पंचायत, विद्यालय प्रबंध समिति और सहकारी समिति के मुखिया वैद्यजी में समाहित है। ग्रामीण जीवन की सड़ी-गली अभिव्यक्ति इस उपन्यास में पूरी तरह से अभिव्यक्त हुई है। लेखक ने शिवपाल गंज गाँव के समाज में व्याप्त विसंगतियों, कटुता और कुरूपता को बखूबी उजागर किया है। उपन्यास के अध्ययन से ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त अपर्याप्तता, अराजकता और विकृति का पता चलता है। शिवपाल गंज स्थित 'चांगमल इंटर कॉलेज' ग्रामीण जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने में पूरी तरह सफल रहा है। विद्यालय भवन का यथार्थ गाँव के यथार्थ को हमारे सामने ला खड़ा कर देता है – "दो बड़े और छोटे कमरे , तीन ओर दिवारों पर छप्पर डाल कर बना अस्तबल, कुछ दूर पक्की ईंटों पर टिन डाल कर कमरे की गुमटी ..... बरगद के नीचे कब्र जैसा चबूतरा ..... सबसे पिछवाड़े तीन चार एकड़ का उसर। इस इमारत के आधार पर कहा जा सकता है वह शांति निकेतन से चार कदम आगे है। बिजली, नल का पानी, पक्का फर्श, सैनेटरी फिटिंग, कुछ भी नहीं था।"[२]

उपन्यास में चित्रित ग्रामीण दृश्य आज भी गाँव में जीवंत हो उठते हैं। आज भी शिक्षा के अभाव में गाँव गंदा है। शिवपाल गंज में दस-ग्यारह साल की उम्र से लेकर बुज़ुर्ग तक तरह-तरह के व्यसनों में लिप्त हैं, जो उनके स्वास्थ्य, धन और पारिवारिक सुख को नष्ट कर देते हैं- "रामदीन

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

की कमरखेड़ी के द्वार पर भांग घुटती है और जुंआ खेला जाता है। लोग अपने कामकाज छोड़कर इन व्यसनों में अपना वक्त और धन बर्बाद करते हैं। वैद्य जी और भ्रष्ट दरबारी अपनी राजनीति का शिकार उन्हीं लोगों को बनाते हैं।"[३] 'राग दरबारी' में मेलों, मंदिरों और खेतों का वर्णन ग्रामीण संस्कृति का परिचय देने के लिए नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन की फूहड़ता तथा जलालत को प्रस्तुत करने के लिए है, जो पाठक को सौंदर्य के स्थान पर वास्तविकता का बोध कराता है। आज के गाँव शहर की भीड़-भाड़ से मुक्त शांतिपूर्ण जीवन जीने के स्थान नहीं रहे। सामान्य सहयोग और प्रेम के स्थान पर कटुता, वैमनस्य, ईर्ष्या और द्वेष बढ़ गए हैं। गाँवों में पुलिस थाने, तहसील और न्याय-परिषदें हैं। फिर भी, इनमें से कोई भी संस्था न तो अपनी ज़िम्मेदारियों का ठीक से निर्वहन कर पाती है और न ही अपने कर्तव्यों के प्रति सच्ची निष्ठा रखती है। संसाधनों के अभाव में, इन पर राजनीतिक दलों का इतना अधिक बोझ है कि ईमानदार कर्मचारी भी अपना कर्तव्य नहीं निभा पाते। सुरक्षा व्यवस्था की तरह न्याय-व्यवस्था भी चरमरा गई है। न्याय-परिषद एक कुम्हार और उसके बेटे के बीच के विवाद को सुलझाने के लिए बैठती है। चपरासी से लेकर कुलपति तक, अपराधी सभी अनपढ़ और निकम्मे हैं। कुलपति न तो पढ़ना-लिखना जानते हैं और न ही अपनी प्रतिष्ठा की परवाह करते हैं। आरोपी छोटे पहलवान सरपंच को सीधे-सीधे गालियाँ देता है और फैसला रोकने के लिए उसे डराने-धमकाने की कोशिश करता है। चाहे वह ट्रैफिक पुलिस द्वारा ट्रक की जाँच का दृश्य हो, मेले में पुजारी का व्यवहार हो या फिर पहलवान और फेरीवाले की मुठभेड़, लेखक ने पूरी ईमानदारी बरती है।

'राग दरबारी' उपन्यास में लेखक श्रीलाल शुक्ल का उद्देश्य ग्रामीण समाज में व्याप्त विसंगतियों और कुरूपताओं को प्रस्तुत कर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने परिस्थितियों के चित्रण पर ज़ोर दिया। छंगामल विद्यालय इंटरमीजिएट कॉलेज शिवपालगंज में निहित शिक्षा व्यवस्था के यथार्थ को वे इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं- "यहाँ से इंटरमीजिएट पास करने वाले लड़के सिर्फ इमारत के आधार पर कह सकते थे कि, हम शांतिनिकेतन से भी आगे हैं; हम असली भारतीय विद्यार्थी है; हम नहीं जानते कि बिजली क्या है, नल का पानी क्या है, पक्का फर्श किसको कहते हैं; सैनिटरी फिटिंग किस चिड़िया का नाम है। हमने विलायती तालिम तक देसी परंपरा में पायी है और इसीलिए हमें देखो, हम आज भी प्राकृत है। हमारे इतना पढ़ लेने पर भी हमारा पेशाब पेड़ के तने पर ही उतरता है, बंद कमरे में ऊपर चढ़ जाता है।"[४] परिवेश के विभिन्न दृश्य फिल्म की तरह आते हैं और फिर पाठक को झकझोरते हुए गायब हो जाते हैं। यह क्रम अनवरत चलता रहता है। प्रत्येक चित्र अपनी छाप छोड़ता है। आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी, उपन्यास में चित्रित परिस्थितियाँ पूरी तरह साकार प्रतीत होती हैं। उपन्यास की दृष्टि से, हिंदी साहित्य का स्वातंत्र्योत्तर काल एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है, जिसमें 'रागदरबारी' का महत्वपूर्ण स्थान है। 'गोदान' के बाद, इसे भी उपन्यास जगत में मील का पत्थर माना जाता है। उपन्यास की पूरी कथा शिवपालगंज में घटित होती है और एक छोटे से गाँव में इतने बड़े भूभाग को समेटना कोई आसान काम नहीं है। सहकारी समितियों, विद्यालयों और न्यायालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालते हुए, यह उपन्यास लोगों को मानवता के अपने विचारों पर पुनर्विचार करने के लिए बाध्य करता है।

निष्कर्ष: श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की वास्तविकताएँ स्पष्ट रूप से उजागर हुई हैं। उनकी रचनाएँ कृषि संकट, जातिवाद, सामाजिक असमानता, राजनीतिक भ्रष्टाचार और पारंपरिक समाज की कठोर सच्चाइयों को उजागर करती हैं। शुक्ल का साहित्य ग्रामीण जीवन के अंधकारमय पहलुओं को उजागर करता है और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देता है। उनके उपन्यास न केवल साहित्यिक कृतियाँ हैं, बल्कि अत्यंत उपेक्षित सामाजिक मुद्दों पर प्रकाश डालने का एक प्रभावी माध्यम भी हैं।'राग दरबारी' एक ऐसा उपन्यास है जो एक गाँव की कहानी के माध्यम से आधुनिक भारतीय जीवन की निरर्थकता को सहजता और निर्ममता से उजागर करता है। यह शायद पहला बड़ा हिंदी उपन्यास है जो शुरू से अंत तक इतने निष्पक्ष और उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य के साथ लिखा गया है। फिर भी 'राग दरबारी' व्यंग्य नहीं है। यह एक बड़े शहर से कुछ दूर एक गाँव के जीवन की कहानी है, जो वर्षों से प्रगति और विकास के वादों के बावजूद निहित स्वार्थों और अनेक अवांछनीय तत्वों से जूझ रहा है। यह उस जीवन का एक जीवंत दस्तावेज़ है।

संदर्भ सूची:

१) शुक्ल सुधांशु, फणीश्वरनाथ रेणु की कहानियों में सामाजिक यथार्थ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, २००६, पृ. ६
२) शुक्ल श्रीलाल, राग दरबारी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, आठवीं आवृत्ति, १९८४, पृ. १६
३) वही, पृ. १७
४) वही, पृ. १९-२०
५) आर. सुरेन्द्रन, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९९७
६) डॉ. पटेल सुरेश, श्रीलाल शुक्ल: एक अध्ययन, साधना प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००९
७) डॉ. रानी राजेश, हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, के. के. पब्लिकेशन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००९
८) डॉ. द्विवेदी विद्याधर, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००७
९) डॉ. रबारी दिनेश, हिन्दी के प्रमुख उपन्यासों में ग्रामीण समाज जीवन, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, २०१५